समाज मनोविज्ञान का क्षेत्र
(SCOPE OF SOCIAL PSYCHOLOGY)

समाज मनोविज्ञान का क्षेत्र अति विस्तृत है। उसकी विषय-वस्तु को कई भागों में विभक्त किया जा सकता है। समाज मनोविज्ञान के सम्पूर्ण क्षेत्र को हम पाँच भागों में विभक्त कर सकते हैं–

1. **सामाजिक मनोविज्ञान समूह प्रक्रम** (Social Psychology Group Process)–एक समाज में व्यक्तियों द्वारा बहुत से ऐसे व्यवहार होते हैं, जो उस समूह विशेष के व्यवहारों या विशेषताओं तथा उसमें अन्तर्निहित क्रिया तत्वों के अन्तर्गत माने जा सकते हैं। समूह प्रभाव भी इसके अन्तर्गत आता है। सामूहिक प्रभावों के अन्तर्गत मानक एवं मानक निर्माण सम्बन्धी प्रक्रमों, समरूपता, नेतृत्व आज्ञाकारिता जैसे पक्षों को रखा जा सकता है। समूह प्रक्रम के अन्तर्गत ही समूह निष्पादन जनमत, लोक संचार एवं प्रभावोत्पादकता जैसी सामाजिक समस्याओं को लेकर समाज मनोवैज्ञानिकों ने इनके विविध पक्षों का वैज्ञानिक अध्ययन किया!

2. **वैयक्तिक सामाजिक मनोविज्ञान प्रक्रम** (Individuals Social Psychology Process)–समाज मनोविज्ञान के अन्तर्गत सामाजिक मनोविज्ञान इसका अध्ययन करते हैं कि किसी भी मानव के मूलभूत मनोविज्ञान प्रक्रमों को समाज व उस समाज में प्रचलित रीति-रिवाज, सामाजिक मूल्य आदि किस प्रकार प्रभावित करते हैं ? व्यक्ति सामाजिक कारकों से प्रेरित होकर अन्य व्यक्तियों, सामाजिक अवसरों तथा व्यक्ति के चारों ओर घटित होने वाली घटनाओं का प्रत्यक्षीकरण करता है। व्यक्ति का यह गुण और स्वभाव होता है कि वह घटना का प्रत्यक्षीकरण करने के तुरन्त बाद उस घटना के कारण का अनुमान लगा लेता है। कार्य कारण सम्बन्ध प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन गुणारोपण शीर्षक के अन्तर्गत किया जाता है। समाज मनोविज्ञान का एक विस्तृत भाग आत्म प्रत्यक्षीकरण, व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण, सामाजिक संज्ञान एवं सामाजिक प्रत्यक्षीकरण के अध्ययनों पर केन्द्रित है। व्यक्ति अपने सामाजीकरण के परिणामस्वरूप अनेक प्रकार की सामाजिक अभिवृत्तियों को विकसित कर लेता है। समाज मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में अभिवृत्ति के स्वरूप, बनावट व निर्माण तथा मापन का अध्ययन करने के साथ-साथ अभिवृत्ति परिवर्तन का भी अध्ययन किया जाता है। अनेक मनोविज्ञान समाज मनोविज्ञान के विषय के अन्तर्गत सामाजिक अभिप्रेरणा तथा स्व: के विकास को भी रखते हैं।

3. **अन्तर्वैयक्तिक सामाजिक मनोविज्ञान प्रक्रम** (Interpersonal Social Psychology Process)–व्यक्ति केवल दूसरों के प्रति अनुक्रियाएँ ही नहीं करता वरन् दूसरों की अनुक्रियाओं के लिए उद्दीपक का कार्य भी करता है। व्यक्तियों के बीच होने वाली अन्त:क्रिया के परिणामस्वरूप अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण आक्रामकता व समाजोपयोगी व्यवहारों की उत्पत्ति होती है। व्यक्तियों के परस्पर अन्त:क्रिया के फलस्वरूप होने वाले व्यवहारों के स्वरूप वर्गीकरण व उनको प्रभावित करने वाले कारकों इत्यादि का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण अंग है।

4. **प्रयोगात्मक सामाजिक मनोविज्ञान** (Experimental Social Psychology)—समाज में रहने वाला मानव सामाजिक मानव कहलाता है, उसका व्यवहार किसी भी भौगोलिक क्षेत्र की जलवायु, भूमि की उर्वरता, जनसंख्या घनत्व, उपलब्ध प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों इत्यादि से प्रभावित होते हैं। इस तरह के सभी पर्यावरणीय कारकों के प्रभावों का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान का अंग बन गया है। सामाजिक व्यवहारों का प्राकृतिक एवं मानव निर्मित पर्यावरण के प्रभावों का अध्ययन इसी क्षेत्र में आता है। शिक्षा भी एक प्रकार का सामाजिक प्रक्रम ही है और शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षा के पराक्रमों से जुड़े शिक्षा सामग्री उपलब्ध कराने वाले लोग भी शिक्षा की विशेषताओं से प्रभावित होते हैं। इन सभी पक्षों का विस्तृत अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत ही आता है।

5. **समाजीकरण एवं सांस्कृतिक प्रभाव** (Socialization and Cultural Effect)—जन्म लेने के बाद बच्चों का विकास जिस रूप में होता है उसे समाजीकरण कहते हैं। व्यक्ति के समाजीकरण से उसके समस्त सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रम एवं व्यवहार प्रभावित होते हैं। समाज मनोविज्ञान में समाजीकरण के विभिन्न रूपों का एवं सांस्कृतिक भिन्नता के भिन्नताकारी प्रभावों का व्यापक रूप से अध्ययन किया जाता है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक मनोविज्ञान की विषय-वस्तु अत्यन्त विस्तृत है तथा यह मनोविज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है।

सामाजिक मनोविज्ञान की समस्याएँ
(PROBLEMS OF SOCIAL PSYCHOLOGY)

जैसा कि समाज मनोविज्ञान की परिभाषा से यह बात स्पष्ट है कि समाज मनोविज्ञान सामाजिक परिवेश में रहने वाले व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है। अत: समाज मनोविज्ञान की प्रमुख समस्या सामाजिक अन्त:क्रियाओं के मनोवैज्ञानिक पहलू का विवेचन करता है। यही विवेचन समाज मनोविज्ञान को कार्यकारण सम्बन्धों की खोज करने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त मानव व्यवहार के सम्बन्ध में कुछ सामान्य नियमों को भी प्रतिपादित करता है। इसी के आधार पर समाज मनोविज्ञान भविष्यवाणी भी करता है कि किन परिस्थितियों में व्यक्ति का व्यवहार कैसा होगा ? इस प्रकार समाज मनोविज्ञान निम्नलिखित सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण करता है—

1. **सामाजिक परिवेश में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन** (Study of the Individuals Behaviour in Social Environment)—समाज सदैव भिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है तथा यह पता लगाता है कि व्यक्ति का व्यवहार विभिन्न सामाजिक उत्तेजनाओं में किस प्रकार प्रभावित होता है तथा व्यक्ति के व्यवहार पर सामाजिक प्रक्रियाओं तथा परिवेश का क्या प्रभाव पड़ता है? इस प्रकार यह बात स्पष्ट है कि समाज मनोविज्ञान की प्राथमिक और प्रमुख समस्या सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार के 'क्या' का अध्ययन करता है।

2. **व्यक्ति के व्यवहार के सम्बन्ध में भविष्यवाणी** (Prediction Reading of Individual Behaviour)—समाज मनोविज्ञान भी अन्य विज्ञानों की तरह ही कार्य-कारण सम्बन्धों के आधार पर समाज में व्यक्ति के विषय में भविष्यवाणी करता है अर्थात् समाज मनोविज्ञान कार्य-प्रणाली सम्बन्धों की खोज करके यह भविष्यवाणी करता है कि व्यक्ति किसी विशेष प्रकार की परिस्थिति में कैसा व्यवहार करेगा ? समाज मनोविज्ञान की विषय-सामग्री अत्यन्त जटिल एवं परिवर्तनशील है। इसी कारण उसके द्वारा की गयी भविष्यवाणी अन्य विज्ञानों की अपेक्षा कम सत्य होती है। किन्तु इसके बावजूद भी इसकी भविष्यवाणी सामाजिक समस्याओं को निपटाने में सहायक सिद्ध होती है।

3. **सामाजिक परिवेश में व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या** (Interpretation of Individual's Behaviour in Social Environment)—समाज मनोविज्ञान एक विज्ञान है। अत: वह केवल व्यक्ति के व्यवहार का पूर्णतया अध्ययन करता है, बल्कि उसकी व्याख्या भी करता है। वह इस बात को स्पष्ट करता है कि व्यक्ति का व्यवहार किन परिस्थितियों में कैसा होगा ? उदाहरणार्थ—समाज मनोविज्ञान जहाँ यह अध्ययन करता है कि कोई भीड़-भाड़ वाले स्थान पर कैसा व्यवहार करता है तथा वह किस प्रकार प्रभावित होता है ? वहीं वह यह भी व्याख्या करता है कि भीड़ में व्यक्ति का व्यवहार ऐसा क्यों होता है ?

4. **विभिन्न समूहों का अध्ययन** (Study of Various Group)—समाज के विभिन्न समूहों का अध्ययन करना समाजशास्त्र की विषय-वस्तु है, अत: समाज मनोविज्ञान विभिन्न समूहों के मनोवैज्ञानिक पहलू का ही अध्ययन करता है। समाज मनोविज्ञान समूहों का अध्ययन केवल उस सीमा तक करता है जहाँ तक वह व्यक्तियों के अलग-अलग व्यवहार की व्याख्या करने के लिए जरूरी होता हैं।

5. **सामाजिक समस्याओं के सम्बन्ध में व्याख्या** (Explanation in Related to the Social Problems)—समाज मनोविज्ञान यथार्थ का विज्ञान है तथा इसके निर्णय मूल्यांकन न होकर वर्णात्मक होते हैं क्योंकि यह समाज में उत्पन्न होने वाली सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करता है तथा समाज मनोविज्ञान को इस क्षेत्र की विशेषता प्राप्त है। अत: यह सामाजिक समस्याओं के सम्बन्ध में सुझाव भी देता है। उदाहरणार्थ—भारत में अनेक समस्याएँ व्याप्त हैं, जिनमें क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद आदि हैं और इन्हीं के कारण समाज में पारस्परिक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। समाज मनोविज्ञान इन समस्याओं के मनोवैज्ञानिक पहलू का अध्ययन करके यह सुझाव देता है कि विभिन्न समूहों के मध्य सामाजिक दूरी कम करके सामाजिक तनावों से बचा जा सकता है।

समाज मनोविज्ञान का मुख्य पक्ष (Main Aspects of Social Psychology)

प्रत्येक विज्ञान दो पक्षों को रखता है। एक व्यावहारिक पक्ष तथा दूसरा सैद्धान्तिक अथवा मौखिक पक्ष। समाज मनोविज्ञान में जो भी समस्याएँ आती हैं वे इन्हीं दोनों पक्षों के अन्तर्गत आती हैं। अत: समाज मनोविज्ञान की समस्याओं को समझने के लिए तथा उनका निराकरण करने के लिए इसके दोनों पक्षों का विवरण निम्न प्रकार है—

1. **व्यावहारिक पक्ष** (Practical Aspect)—समाज मनोविज्ञान एक ओर समाज में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है, वहीं दूसरी ओर वह उन्हीं अध्ययनों से प्राप्त निर्णयों के आधार पर भविष्यवाणी भी करता है तथा समाज में व्याप्त मनोवैज्ञानिक समस्याओं के लिए सुझाव भी देता है। यह समाज मनोविज्ञान का व्यावहारिक पक्ष है, लेकिन इस विषय में यह याद रखना आवश्यक है कि समाज मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र दोनों की समस्याएँ समाज से सम्बन्धित होने के बावजूद इन दोनों की विषय-वस्तु अलग-अलग है। समाज मनोविज्ञान का सम्बन्ध समाज की केवल मनोवैज्ञानिक समस्याओं से होता है, जबकि समाजशास्त्र विभिन्न सामाजिक समस्याओं का समाधान करता है। जैसा कि **क्रेच** और **क्रचफील्ड** ने कहा है कि "सामाजिक समस्याओं से निपटने में मनोविज्ञान का वास्तविक कार्य सम्पूर्ण समस्या के केवल एक पहलू के विषय में अर्थात् समस्या में सम्मिलित व्यक्ति और व्यक्ति समूह के व्यवहार के विषय में विश्लेषक नैदानिक युद्ध विद्या विशारद और सलाहकार का है।"

2. **मौखिक पक्ष** (Verbal Aspect)—जब समाज मनोविज्ञान द्वारा सामाजिक परिवेश में मनुष्य के व्यवहार का अध्ययन करके उसकी व्याख्या की जाती है तो यह समाज मनोविज्ञान का मौखिक पक्ष कहलाता है। समाज मनोविज्ञान इस पक्ष के अन्तर्गत व्यक्ति के व्यवहार का विभिन्न परिस्थितियों एवं उत्तेजनाओं में अध्ययन करके कार्य कारण सम्बन्धों की खोज करता है और इसी के आधार पर यह व्यक्ति व्यवहारों, अनुभवों, आदतों एवं संवेगों पर अन्य व्यक्तियों द्वारा पड़ने वाले प्रभावों का पता लगाता है तथा इसके बाद सामान्य नियमों की खोज करता है।